ন

1. न indecl. gaņa स्वरादि zu P. 1, 1, 37. 1) nicht Nia. 1, 4. AK. 3, 5, 11. H. 1539. Map. avj. 40. नेन्द्रं देवमंमसत १. v. 10,86, 1.6. ईयुर्घ न न्यर्धम् 7, 18,9.20. 21,5. 57,3. (भयस्यानसङ्ख्राणि) मूहमाविशन्ति न पण्डितम् bemächtigen sich des Thoren, nicht des Weisen MBu. 3,62. ग्रीप्तारं न नि-धीनां मक्यित मकेश्वारं विब्धाः nicht den Hüter der Schatze, wohl aber den grossen Herrn verehren die Weisen Pankar. II, 72. बाह्यास्ति न ना Çuk. 43,9. Auch bei einer Bitte, einem Wunsche, einem Gebote: न मी गर्बायी: ५.४. 1,158,5. 2,30,7. न नी गृङ्खाणाम्यं तीतपासि 🗛 🗸 ६, 32,1. मपा ते ऽलर्क्तं द्वपं न वा विखुर्जना इति N. 14,14. तित्रपैर्धार्यते शस्त्रं नार्तशब्दे। भवेदिति R. 3,14,3; vgl. u. 3. म्रतिवादीस्तितिन्तेत ना-वमन्येत कं च न M. 6,47.55. Vor einem imperat. dagegen steht immer मा und नैवं वर Pankat. 42,12 ist ohne allen Zweisel zu ändern. Eben so steht A und nicht A vor einem aor, ohne Augment, der die Stelle eines imperat. vertritt. Eine Ausnahme haben wir in der Stelle: शमिष्ठामा-धास्तत्त्पे न कर्किचित् Buic. P. 9,18,30, wo मा das Versmass stören würde. Dagegen wird MBu. 5, 6032 statt नैवं मन: क्या: wobl मैवं zu lesen sein. In einer Antwort kann bei न statt des aor. auch das praes. stehen nach P. 3,2,121. म्रकार्थी: किम न करोमि oder नाकार्षम् Sch. In aneinandergereihten Sätzen oder Satzgliedern wird die Negation einfach wiederholt, oder sie wird an zweiter oder fernerer Stelle durch die verbindenden Partikeln उत, च, श्रीप, चापि, वा, म्रय वा verstärkt: न वा खावा ऽक्भिर्नात सिन्धवा न देवतं पणपा नार्नप्रमियम् BV 1,151,9. न चेद्वारे। भविता नात राधः MBn. 5,2225. प्रति-श्रवणसंभाषे शयाना न समाचरेत्। नासीना न च भुझाना न तिष्ठव पराब्यु-खः ॥ M. 2,195. ह्रास्था नार्चयेदेनं न कुढ़ा नात्तिके स्त्रियाः 202. 3,8.9. 4,15.37.79. नाधीयीताश्चमाद्वेषा न वृत्तं न च क्रिस्तिनम् । न नावं न खर्र नाष्ट्रं नेरिपास्था न यानगः॥ 120. Hir. Pr. 11. प्रविशत्तं न मां कश्चिर्पश्य-न्नाप्यवार्यत् N. 3,24. R. 1,54,10. नाक्नस्यार् एयस्य देवता । न चाप्यस्य गिरेविंप्रा नैव नखाश्च देवता ॥ N. 12,54. नातिश्रमापनवनाय न च श्रमाय Çік. 103. Влен. 8,9. Утр. 307. कृतं न कार्पार्पितबन्धनं सखे शिरीपनाग-एडविलम्बिकेशरम् । न वा शर्चन्द्रमरीचिकामलं मृणालसूत्रं रचितं स्त-नात्तरे ॥ Ç:x. 148. नैव क्रीधं गमिष्यामि न च वन्ये ऋषं च न । ऋष वा ना-

च्कुसिष्यामि R. 1,64,18. Dieses ist das न, welches als Synonym von उताहा, यदि वा, यद्वा und किं वा Taik. 3, 4, 4 aufgeführt wird. Sehr häafig wird die Negation auch nicht wiederholt und statt ihrer stehen einfach वा, म्रपि वा, च. या नरः । न कृष्पति रलायति वा M. 2,98. धर्मा-ें चें। यत्र न स्याता शृश्रुषा वापि तिद्धा 112. नैव क्वापि प्रपश्यित नलं वा भीमप्त्रिकाम् N. 16,5. न ते भयं नर्ट्याघ दंष्ट्रिभ्यः शत्र्ता ऽपि वा। ब-हार्षिभ्यश्च कुतः 14, 18. नाब्राव्सणे गुरै। शिष्ये वासमात्यत्तिकं वसेत्। ब्राह्मणे चाननुचाने M. 2,242. न ब्राह्मणस्य व्यतिधिर्गाहे राजन्य उच्यते। वैश्यष्रद्री सखा चैव ज्ञातया गुरुरेव च ॥ ३,११०.१०३.२८०. ४,८४.१३३. ना-चिक्यादात्मना मूलं परेषां चातितृष्ठया ७,१३७. संपदि यस्य न कुर्षा विप-दि विषादे। रणे च धीरत्वम् wer im Glück sich nicht freut, im Unglück nicht verzweiselt und in der Schlacht beherzt ist ad Hir. 1,28. Hier haben die Ausgaben nach विषादी ein न, welches aber das Metrum, wie schon Lassen bemerkt hat, nicht leidet. Nicht selten ist auch der Fall, dass die Negation an zwei oder mehr Stellen gesetzt, an einer anderen aber wieder weggelassen wird: नाम्रीयाद्वार्यया सार्ध नैनामीतेत चाश्रतीम् । त्वतीं जम्भमाणां वा न चासीनां यद्यास्खम् ॥ M. 4,43. नाञ्ज-यत्ती स्वके नेत्रे न चाभ्यक्तामनावृताम् । न पश्येत्प्रसवती च 🛺 न पाणि-पादचपले। न नेत्रचपले। ४नृतुः। न स्यादाक्कपलश्चैव न पर्द्रोक्कर्मधीः॥ 177. न राज्ञामघरेषा अस्ति त्रतिना न च सिल्लणाम् ४,९३. तत्र कुप्रावता नासीद्दितो वा प्रात्तमे। नाम्छ्युङ्क चाराता नासगन्धी न चानुज्ञः ॥ R. 1,6.8. न देवेषु न यतेषु तारम्प्यवती क्वाचित्। मान्षेष्ठाप चान्येषु रष्टपूर्वाय वा श्रुता ॥ N. 1, 13. नार्क् शतसक्स्रिण नापि कारिशतिर्गवाम् । राजन्दास्यामि शबला राशिभी रजतस्य वा ॥ R. 1,53, 11. Gern schliesst sich न unmittelbar an eine oder zwei andere Partikel; Beispiele für न च, न चापि, नापि, नात, न वा und नैव haben wir schon oben gehabt. न चैव (von einander getrennt 2, 56) M. 4, 55. 9, 89. नापि च 4,47. न त् (von einander getrenut 3,144) 3,120. 4,33.251. 5,157. ਜ ਕੇਕ 10,94.95. ਜ ਕੇਕ त् ४,३७. न चेत् s. unter चेद् 4, und न खल् unter खल्. न क् gana चारि zu P. 1,4.57. Diese letzte Verbindung bewirkt, dass das Verbum finitum seinen Ton bewahrt, wenn unter der Form einer in der Zukunst negirten Thäligkeit ein Verbot ausgesprochen wird. P. 8,1,31. न रू भाह्यसे. न